सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● नीरजा मेहता 'कमलिनी'

सृजन-समीक्षा

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

नीरजा मेहता 'कमलिनी' का परिचय

नाम- नीरजा मेहता 'कमलिनी'
(सेवानिवृत्त अध्यापिका)
जन्मतिथि - 24 दिसंबर 1956
जन्मस्थान- बरेली (यू.पी.)
निवास स्थान- गाज़ियाबाद, NCR (यू.पी.)
माता- स्व. विमला नागर
पिता- स्व. श्रीनारायण नागर
पति- श्री मुकुन्द मेहता (सेवानिवृत)
शिक्षा- एम. ए. हिन्दी साहित्य (मेरठ वि.वि.)
एम. ए. संस्कृत साहित्य (हिमाचल वि. वि.)
बी.एड. (अन्नामलाई वि. वि.)
एल एल. बी. (लखनऊ वि. वि.)
सम्प्रति- कवयित्री / लेखिका (ऐच्छिक)
लेखन विधा- छंदमुक्त, गीत, मुक्तक, हाइकू, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, लेख आदि।
मनपसन्द विधा- छंदमुक्त (स्वतंत्र भाव)
रूचि- संगीत सुनना, तबला बजाना, कविता, कहानी आदि लिखना और साहित्यिक पुस्तकें, साहित्यिक नॉवेल आदि पढ़कर ज्ञान अर्जित करना।
(मेरा जन्म एक साधारण गुजराती परिवार में हुआ। पिताजी की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी न होने के कारण भले ही भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित रही किन्तु मेरे पिताजी ने मेरे भाई व मुझको अच्छी शिक्षा व संस्कार दिए। मेरी माताजी (उस ज़माने में जब स्त्रियाँ घर से बाहर नहीं निकलतीं थीं) ने बी.ए. तक शिक्षा गृहण की और तीन वर्ष तक अध्यापन कार्य भी किया। उन्हीं की प्रेरणा से मैं आगे बढ़ी। विवाह पूर्व मैंने बी.ए., एल एल. बी. किया और विवाह के बाद विद्यालय में शिक्षण

कार्य के साथ लगभग दस वर्ष बाद हिंदी साहित्य और संस्कृत साहित्य में एम.ए. किया और बी.एड. किया। घर गृहस्थी, विद्यालय में शिक्षण कार्य और दो छोटे बच्चों के साथ ये इतना सरल न था। इन सबमें मेरे पति ने मुझे पूर्ण सहयोग दिया। आज जिस मुकाम पर हूँ उसका श्रेय मेरे परिवार को जाता है। अपने खाली समय का सदुपयोग मैं तबला बजाकर करती हूँ, जिसकी शिक्षा मैंने 15 वर्ष की आयु में ली थी। ये मेरी थकान हटाकर चिंतामुक्त कर देता है।

लगभग 30 वर्ष तक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत रहकर 31 दिसंबर 2016 को विद्यालय से सेवानिवृत्त हुई। मेरे शिक्षण विषय हिंदी व संस्कृत रहे। एल एल.बी. करने के बाद किसी वकील से शिक्षा भी ली किन्तु आनंद नहीं आया क्योंकि बचपन से साहित्यिक पुस्तकें पढ़ीं थीं। सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, रामचंद्र शुक्ल, आचार्य चतुरसेन आदि अनेक साहित्यकारों को पढ़कर बड़ी हुई तो साहित्य की तरफ रुझान होना स्वाभाविक था।

मैंने अपनी पहली कविता 15 वर्ष की आयु में "माँ" पर लिखी थी, इसी तरह कभी कोई लेख, कहानी, कविता कभी-कभी लिख लेती थी किन्तु उन पन्नों को कभी सहेज कर नहीं रखा क्योंकि लेखन को कभी गम्भीरता से नहीं लिया और न ही इसका इल्म था कि आगे जाकर कविता पुनः मुखरित होगी। कुछ वर्ष तक घर गृहस्थी, बच्चों की देखरेख, शिक्षण कार्य में लेखन के लिए समय ही न मिला, फिर जब बच्चे थोड़े बड़े हुए तो पुनः लेखन की तरफ रुझान हुआ। शुरू में सिर्फ डायरी तक ही सब सीमित रहा फिर पत्र-पत्रिकाओं में स्थान मिलने लगा किन्तु आभासी दुनिया से जुड़ने के बाद मंच मिला। इस तरह लेखन को विस्तार मिला। धीरे-धीरे कई साझा संग्रहों में स्थान मिला, 4 एकल कृतियाँ प्रकाशित हुईं और साहित्य के लिए कई बार सम्मानित भी हुई।)

साहित्यिक विवरण-

(हिन्दी साहित्य में योगदान)

(1)प्रकाशन विवरण

(1) प्रकाशित एकल कृतिया

(1) "मन दर्पण" (काव्य संग्रह)

(2) "नीरजा का आत्ममंथन" (काव्य संग्रह)

(3) "उमंग" (बाल काव्य संग्रह)

(4) "परछाइयाँ" (संस्मरण)

(2) अब तक 27 साझा काव्य संग्रह प्रकाशित

(क़दमों के निशान, सहोदरी सोपान 2, सहोदरी सोपान 3, भावों की हाला, कस्तूरी कंचन, दीपशिखा, शब्द कलश, भारत की प्रतिभाशाली हिंदी कवयित्रियाँ (शोध परक पुस्तक), भारत के प्रतिभाशाली हिंदी रचनाकार (शोध परक पुस्तक), काव्य अमृत, प्रेम काव्य सागर, शब्द गंगा, शब्द अनुराग, कचंगल में सीपियाँ, सत्यम प्रभात, शब्दों के रंग, पुष्पगंधा, शब्दों का प्याला, कुछ यूँ बोले अहसास, खनक आखर की, कश्ती में चाँद, काव्य गंगा, कविता अभिराम 1, संदल सुगंध, मधुबन, शब्द-शब्द समिधा, शब्द सृजन।)

(3)प्रकाशित 4 साझा कहानी संग्रह और 1 साझा लघु कथा संग्रह, 1 साझा समीक्षा संग्रह

(अंतर्मन की खोज, सहोदरी कथा, तितिक्षा, 18 कहानियाँ 18 कहानीकार, मंथन, शब्द गाथा 2)

(शीघ्र प्रकाशित होने वाले 1 साझा लघु कथा संग्रह व 1 साझा लेख संग्रह)

(4) **पत्र-पत्रिकायें**

(देश विदेश के अनेकों पत्र- पत्रिकाओं व ई-पत्रिकाओं में लगभग 400 से अधिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।)

(i) **समाचार-पत्रों में प्रकाशन**

(अमर उजाला ग्वालियर; लोकजंग भोपाल; दैनिक हमारा मेट्रो नोएडा; वर्तमान अंकुर नोएडा; शिखर विजय सीकर ; दीपाक्षर टाइम्स राजस्थान; जय विजय नवी मुंबई ; गज केसरी युग गाज़ियाबाद; नव एक्सप्रेस राजस्थान; राजस्थान की जान राजस्थान; नव प्रदेश; ब्रज उपहार, मथुरा जनपद से आदि।)

(ii) **ई-पत्रिकाओं में प्रकाशन**

(होप्स, जय विजय, काव्यसागर, साहित्यपीडिया, अचिंत साहित्य, H-हिंदी, अंतरा शब्द शक्ति, लिटरेचर पॉइंट, प्रयास आदि।)

(iii) **पत्रिकाओं में प्रकाशन**

(नागर समाचार आगरा; प्रयास पत्रिका कनाडा; सत्य की मशाल; गुफ्तगू पत्रिका इलाहाबाद; साहित्य सागर पत्रिका; साहित्य समीर दस्तक भोपाल; दिव्यतूलिका साहित्यायन ग्वालियर, साहित्य कलश, जय विजय नवी मुंबई; अनन्तिम कानपुर

आदि।)

सम्मान विवरण

साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं /समूहों द्वारा कई बार सम्मानित

(काव्य मंजरी सम्मान, छंदमुक्त पाठशाला समूह द्वारा सम्मानित, छंदमुक्त अभिव्यक्ति मंच द्वारा सम्मानित, 2 समूहों/संस्थाओं द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, 3 समूहों/संस्थाओं द्वारा साहित्यकार सम्मान, भाषा सहोदरी हिंदी सम्मान, साहित्य गौरव अलंकरण सम्मान, आगमन समूह द्वारा सम्मानित, माँ शारदे उत्कर्ष सम्मान, दीपशिखा सम्मान, शब्द कलश सम्मान, काव्य गौरव सम्मान, गायत्री साहित्य संस्थान द्वारा सम्मानित, नारी गौरव सम्मान, युग सुरभि सम्मान, शब्द शक्ति सम्मान, अमृत सम्मान, प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान, प्रेम सागर सम्मान, आगमन साहित्य सम्मान, श्रेष्ठ शब्द शिल्पी सम्मान, हिन्दी साहित्य गौरव सम्मान, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा सम्मानित, सारस्वत सम्मान, शारदा सम्मान, श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान, साहित्य तुलसी सम्मान, सरस्वती सम्मान, दिव्यतूलिका साहित्यायन सम्मान, हिंदी वैभव सम्मान, हिंदी सागर सम्मान, शब्द सृजन सम्मान, शब्द-शब्द समिधा सम्मान, माँ शारदे सम्मान आदि।)

विशेष उपलब्धियाँ

(1) विद्यालय से दो बार शिक्षक दिवस पर "सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान" प्राप्त हुआ है। (1997 और 2008 में)

(2) उपाधि---काव्य साहित्य सरताज उपाधि 2016 (ग्वालियर साहित्य, कला परिषद मध्य प्रदेश द्वारा प्राप्त)

(3) विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा "श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान" व "श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान"

(4) हिन्दी सागर सम्मान (संपादक सम्मान)

(5) युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच (न्यास) द्वारा "श्रेष्ठ साहित्यिक संचालिका सम्मान"

(6) हिंदुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा "समीक्षा सम्मान"

(7) ग्वालियर साहित्य, कला परिषद मध्य प्रदेश द्वारा "लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2017" प्राप्त हुआ।

(8) "मन दर्पण" एकल काव्य संग्रह के लिए "कलमकलाधर/कलमवीर सम्मान"(ग्वालियर साहित्य, कला परिषद मध्य प्रदेश द्वारा)

(9) ग्वालियर साहित्य, कला परिषद मध्य प्रदेश द्वारा "साहित्य जगत के स्वर्ण स्तम्भ सम्मान"

(10) राष्ट्रीय मासिक पत्रिका मेरे व्यक्तित्व कृतित्व पर केंद्रित "ट्रू मीडिया विशेषांक दिसंबर 2017" प्रकाशित

(11) ट्रू मीडिया गौरव सम्मान 2017

(12) काव्य मंच--: काव्य पुस्तकों के लोकार्पण व काव्य गोष्ठियों में विभिन्न स्थानों पर काव्य पाठ किया है।

सामाजिक कार्य : गरीब कन्याओं को घर पर मुफ्त शिक्षा देती हूँ। उनको देश, धर्म, संस्कार, संस्कृति, भाषा आदि का ज्ञान देती हूँ। उनको निडर व देश का जागरूक इंसान बनने की प्रेरणा देती हूँ।

लेखन का उद्देश्य साहित्य सेवा, मनोरंजन व पाठन सामग्री उपलब्ध कराने के अतिरिक्त समाज में जागरूकता लाना और अपने विचार साझा करना।

लेखन के प्रति विचार लेखन स्वान्तः सुखाय तो है ही किन्तु साथ ही ये समाज कल्याण का कार्य भी करता है।

मेरा कथन "कर्म ही जीवन है"

मेरा मानना है कि परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, मन की इच्छा से नहीं। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सच्ची लगन, मेहनत, अनुशासन व ईमानदारी होनी अत्यावश्यक है।

मेरी पसंदीदा स्वरचित पंक्ति

"न छीन पाओगे कभी, बेवजह ये पहल है
ये ईंटों का नहीं, मेरे ख़्वाबों का महल है।"

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

"सृजक का सृजन"

नीर से जन्मी नारी

मैं हूँ नीर से जन्मी नारी
पानी सा कोमल मेरा एहसास,
जल सा पारदर्शक मेरा मन,
सलिल सी तृप्त करती मेरी
अनुभूति,
वारि सा शांत मेरा स्वभाव,
तोय सी स्वच्छ मेरी देह,
हर रंग जिसमें घुल जाए
ऐसी मैं अम्बु सी रंगहीन,
हाँ, मैं हूँ नीर से जन्मी नारी।

आत्मा को सुख देती वृष्टि सी
नेह बरसाती मैं,
जल से भीगी भीनी माटी की
सुगंध सी प्यास बुझाती मैं,
सागर के नीले हरे मिश्रण सी
तरंगित करती मैं,
उपवन की क्यारियों में
महकती उदक सी,
आब में खिलती कमल सी,
हाँ, मैं हूँ नीर से जन्मी नारी।

न मैं पौरुष से हारी,
न मैं स्त्रीत्व से ठगी गयी,
मैं बाल अरुण की
लालिमा सी तेजस्विता,
मैं उज्जवल
चाँद सी चंद्रमुखी,
मैं भू पर विस्तृत
चन्द्रिका सी शीतल,
मैं कमलपत्र की
तुषार बूँदों सी कोमल ,

मैं गुलाब की पंखुड़ियों सी
नर्म एहसास देती,
जल सी पावन
हाँ, मैं हूँ नीर से जन्मी नारी।
कहलाती हूँ 'नीरजा कमलिनी'।।

मैं नर हूँ

मैं नर हूँ
मैं हूँ कर्तव्यपरायण
नहीं बनना मुझे नारायण।
मुझमे दम्भ है, आक्रोश है
तू शीतल जल सा शांत है,
मुझमें लोभ है, मोह है
तू निर्विकार है,
तू गगन सा विस्तृत
मैं टूटे तारे सा,
तू महासागर मैं लहर सा,
तू प्राण मैं काया,
तू अमर मैं क्षणिक,
तू मन से स्थिर
मैं पग भ्रमित।

हाँ, मैं नर हूँ।
मैं राम नहीं जिसने ली
अग्निपरीक्षा,
मैं कृष्ण नहीं जिसने रचीं
लीलाएं,
मैं दानी भी हूँ, कृपण भी,
मैं वीर भी हूँ, कायर भी,
मैं सत्य को पहचानता हूँ
पर झूठ का सहारा भी ले लेता
हूँ,
यदी मैं भौतिकवादी हूँ, तो
आध्यात्मिक भी।

मुझमें शक्ति भी है, कोमलता भी
मुझमें आशा भी है, विश्वास भी
मुझमें तृष्णा भी है, तृप्ति भी
मुझमें अनुराग भी है, विराग भी।

मुझे है कर्त्तव्यबोध
ज्ञान का प्रकाश देना चाहता हूँ,
मुझे आगे बढ़ने की चाह है
जीतने की इच्छा है
बनानी एक नई राह है
मेरे लिए कर्म ही प्रधान है।
मुझे नारायण बन
प्रणियों को
सत्य असत्य पर नहीं तौलना,
धर्म अधर्म पर नहीं देखना,
क्योंकि मैं नर हूँ,

हाँ, मैं नर हूँ
मैं हूँ कर्तव्यपरायण
नहीं बनना मुझे नारायण।

प्रेम क्या है ?

प्रेम जीवन का छंद है
सजता अलंकार है
मन का श्रृंगार है।

प्रेम निराकार है, निश्छल है
जीवन का अभिव्यक्त अर्थ है
सुखद आत्मिक अनुभूति है।

प्रेम शाश्वत है , सत्य है
अनमोल है, अपरिमित है
अनन्य है, असीमित है।

प्रेम पूजा है, कामना है
जीवन की साधना है
पावन भावना है।

प्रेम देवालय का दीप है
स्वच्छ मन का प्रतीक है
सुर से सजा संगीत है।

प्रेम कोमल एहसास है
खिलता मधुमास है
सुरम्य सुवास है।

प्रेम मधुर यामिनी है
चमकती दामिनी है
उजली चाँदनी है।

प्रेम मन में उठती तरंग है
लहराती उमंग है
इन्द्रधनुषी रंग है।

प्रेम वीणा की झंकार है
प्रकृति का निखार है
शीतल फुहार है।

प्रेम सम्मान है, समर्पण है
दमकता दर्पण है
पुष्प अर्पण है।

चुनौती

आज हुई मुझे
सत्य की पहचान
ज्ञान हुआ मुझे
पुरुषार्थ का
मुक्ति का प्रकाश का।

पहचान गयी मैं
मिथ्या भ्रम को
नियति को
अन्धकार को।

आज मैं
दे रही चुनौती
उस भ्रम को
जिसको मैंने
किया है परास्त।

समझ चुकी हूँ मैं
झूठ को
अज्ञान को
मायाजाल को।

नहीं बाँध सकता मुझे
मोह के पाश में
मृगतृष्णा में
झूठी आशा में।

आज विजयी हुई हूँ मैं
दी है मैंने मात
उखाड़ फेंका है तुझे
हाथ की लकीरों से।

जानता है तू
अब
मैं हूँ मुक्त
मैं हूँ सत्य
मैं हूँ विश्वास

और तू किसी
मरीचिका समान
मात्र भ्रम !
मात्र भ्रम !!
मात्र भ्रम !!!

यूँ बनी कविता

जब भी एकाकी होती हूँ
कल्पनाओं को
देती हूँ उड़ान,
मन को उतारती हूँ
गहन सागर में,
पंख फैला
विचरती हूँ गगन में,
तभी
तुषार बूँदों सदृश
मन के किसी कोने में
फिसलने लगते हैं शब्द,
अवनि पर बिखरी
चन्द्रिका सदृश
तूलिका बन
सुवासित करती हूँ
कोरे पत्र को,
निर्झरिणी बन
बहाती हूँ
मन के भावों को,
शीतल शांत मन से
समेटती हूँ आनंद
प्रकृति का,
देखती हूँ स्वयं को
आईने में,
एक अजब उत्साह
एक अनन्य खुमारी
के साथ
झूम जाती हूँ
और फिर ! और फिर !!
रचती हूँ
कुछ पंक्तियाँ,
और देखिये मित्रों
"यूँ बनी कविता"।

मधुमास

मधर मधर मधमास खिला
मन पुलकित उल्लास मिला।

भासमान है सर्य बिम्ब
चल रहा साथ निज प्रतिबिम्ब।

प्रक़ति ओढी है नव दकल
मन में उठते हैं भाव फूल।

कोकिला करे कह पकार
गायें भी भरती हुंकार।

मन वासंती जागे उमंग
बह रही ख़ुशी की नव तरंग।

दे रही थाप गोरी पी के संग
चढ़ रहा प्रेम का पीत रंग।

नव विहान ले रहा वितान
जलद से शोभित आसमान।

शोभायमान है निशीथ चन्द्र
उठती लहरें ज्यों बीच समुन्द्र।

दीप्तिमान हई तरावालि
उपवन में विकसित कुसुमावलि।

करे हिलोर मन जिजीविषा
पूछे विधातृ क्या अभिलाषा।

अनुभूति

टूटी तन्द्रा मन जाग उठा
उपवन ऐसा था महक रहा।

मैं छोड़ सभी कुछ दौड़ पड़ी
रह गयी अचम्भित खड़ी खड़ी।

पादप पर विकसित रक्त पुष्प
खिल गए ज़मीं पर पात ख़ुश्क।

पादप से फिसली ओस बूँद
कर रही स्पर्श मैं आँख मूँद।

नन्हे पक्षी कर रहे किलोल
चल रही पवन खिल रहा भोर।

बैठे तरु पर खग, कर रहे पुकार
मन पुलक रहा था बार-बार।

कर रही आनन्दित भोर मुझे
थी सुखद अनुभूति मिली मुझे।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आज की उत्सव मूर्ति आ नीरजा मेहता जी को मेरा सादर प्रणाम, **आपका परिचय, प्रकाशन, सम्मान, उपलब्धियां, सामाजिक कार्य, लेखन का उद्देश्य, लेखन के प्रति विचार, मेरा कथन, मेरी पसंदीदा स्वरचित पंक्ति, पढ़कर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूं** कि आप जैसे निर्मल , सरल, सहृदय व्यक्तित्व का सानिध्य प्राप्त हुआ। आपके लिए कुछ भी कहना सूरज को दिया दिखाने सा होगा। आपकी प्रशंसा के लिए सारे शब्द गौण हैं।

नीर से जन्मी नारी अद्भुत सृजन है, नीर और नारी की खूबसूरत समानता और अंत में वहीं से जन्मी नीरजा कमलिनी, वाआआआआआह।

मैं नर हूं बहुत ही सुन्दर रचना , प्रेम क्या है ग़ज़ब की भावाभिव्यक्ति है।चुनौती अद्भुत सृजन , स्वयं पर विश्वास और नियंत्रण का सुंदर चित्रण

यूं बनी कविता लाजवाब मधुमास बहुत सुंदर रचना, अनुभूति, अति सुन्दर रचना....आपकी सारी रचनाएं अलौकिक दुनिया की सैर करा रही हैं। ईश्वर आपको सदैव स्वस्थ ,प्रसन्न, और सम्पन्न रखें। **मंगलकामनाएं,....**

पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

नमस्कार,,,,,, आदरणीय नीरजा मेहताजी,,, बहुतबहुत- **बधाई** ,,,आज की उत्सव मूर्ति बनने के लिए,,,, इतना विराट परिचय,,, इतनी उपलब्धियां,,,, इतना शानदार व्यक्तित्व,,,, इतना सरल आत्मकथ्य,,, मेरे हिसाब से इसके आगे कुछ कहना,,,, हम जैसों के लिए तो धृष्टता ही होगी,,, वाकई अद्भुत,,,,,,

नीर से जन्मी नारी,, गजब का सृजन,,,

मैं नर हूं, यथार्थ कहन,,,

प्रेम क्या है ,,,अद्भुत परिभाषा प्रेम की,,,

चुनौती ,,,बढ़िया रचना,,,

यूं बनी कविता ,,वाकई ऐसे ही बनती है कविता,,,

मधुमास ,,,आशावादी रचना,,,

अनुभूति ,,,बहुत शानदार,,,,

कुल मिलाकर संपूर्ण व्यक्तित्व आपका,,, आपको पुनः पुनः ढेर सारी बधाई और आपके उज्जवल साहित्यिक भविष्य के लिए शुभकामनाएं,,, आप स्वस्थ रहें,,, आप

का सानिध्य मार्गदर्शन हम अनुजों को मिलता रहे,,,, यही प्रभु से प्रार्थना है,,,,,,,
सादर प्रणाम स्वीकार करें,...

जयकृष्ण चांड़क 'जय'हरदा म प्र

3.

बहुत बहुत बधाई सह नमन आदरणीया नीरजा दीदी को मुझे भी सौभाग्य मिला आपकी रचनाये पढ़ने का बहुत ही सशक्त कलम है आपकी **बहुत शुभकामनाएं,...**

पुष्पित पराग नीरजा,हिंदी नूतन गान|
देख आपकी साधना,करे कंठ हर गान||
करे कंठ हर गान,प्रेम की शुचि परिभाषा|
होती नित अनुभूति,काव्य की ऐसी भाषा||
कहे दिव्य कर जोड़,नमन मेरा है अर्पित|
देना आर्शीवाद,अनुज भी हो पुष्पित||

~जितेन्द्र चौहान "दिव्य"

3.

आदरणीया नीरजा मेहता जी आपके जीवन परिचय आत्मकथ्य को पढ़ा और आपके संघर्षमय जीवन के बारे में जाना आपके सफलतम जीवन को शत शत नमन। आपको जो सम्मान मिले तथा आपकी प्रकाशित रचनाएँ व पुस्तकें सहज ही आपकी साहित्य सेवा को उद्घाटित कर देते है।

आपकी रचनाएँ महिलाओं एवं पुरुषों की मनोदशा की समानरूप से पक्षधर है। जहाँ आपने नारी की मनोदशा को व्यक्त किया है वही परुष की महत्ता भी प्रतिपादित की है। आपने प्रेम क्या है रचना में बड़े ही सहज रूप से जीवन में प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित किया है। आपकी सभी रचनाएँ मानव मन की कथा व्यथा को व्यक्त कर रही है। सभी रचनाएँ उत्तम है सभी ने मन को स्पर्श किया है। हृदय को आल्हादित किया है। आप सदैव यूँ ही महिलाओं की शिक्षा के कार्य करते हुए उन्हें शिक्षा की नई रोशनी प्रदान करती रहे। आप साहित्य के क्षेत्र में भी आपकी कलम सदैव चलती रहे इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ आपकी कलम को नमन।

कैलाश मंडलोई 'कदंब', खरगोन (मप्र)

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com